DR. AKHILESH KUMAR SINGH
B.A-PART-III
PAPER-VI

## ब्राह्मी लिपि का उद्भव :-

यद्यपि भारत के लोग लेखन कला से पाँच सहस्राब्दी ई० पू० से भी परिचित थे, परंतु वह लिपि जिसे हम सिन्धु घाटी लिपि कहते हैं अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। इसलिए यह अब तक रहस्य है। ब्राह्मी भारत की प्राचीनतम लिपि है। जो पढ़ ली गई है एवं इसके सर्वप्राचीन नमूने हमें अशोक के अभिलेखों में मिलते हैं। सिंधु घाटी लिपि और ब्राह्मी लिपि में तुलना करने पर हमें दोनों में कोई संबंध नहीं दिखाई पड़ता है। सिंधु लिपि से समाप्त होने के उपरांत 1200 वर्षों बाद एकाएक ब्राह्मी लिपि का व्यवहार तीसरी सदी ई० पू० अशोक के अभिलेख में देखते हैं। इसी कारण इतिहासकारों में यह विवाद का विषय है कि ब्राह्मी की उत्पत्ति कैसे हुई या इसके उत्पत्ति के कौन कौन से सिद्धांत हैं। इतिहासकारों ने अनेक प्रकार के मन्तव्य प्रकट किये हैं। मुख्यतः इन सिद्धांतों को हम दो भागों में बाँट सकते हैं।

(i) देशी उत्पत्ति सिद्धांत
(ii) विदेशी उत्पत्ति सिद्धांत

(i) देशी उत्पत्ति सिद्धांत :- जो लोग यह मानते हैं कि ब्राह्मी की उत्पत्ति भारत में हुई, उसके भी दो अलग मत हैं।

(a) द्रविड़ उत्पत्ति सिद्धांत :-
(b) आर्य उत्पत्ति सिद्धांत :-

(a) द्रविड़ उत्पत्ति सिद्धांत :- जो लोग यह मानते हैं कि ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति द्रविड़ लिपि से हुई है उसमें Alward-Fomes एवं Father Iras मुख्य हैं, इनका मानना है कि सिंधु सभ्यता द्रविड़ सभ्यता थी, क्योंकि उसमें शिवपूजा का प्रचलन था व आर्यों में शिव को बाद में ग्रहण किया गया। वेदों में बड़े नगरों व व्यापारिक सभ्यता का उल्लेख नहीं है, वह सभ्यता ग्रामीण व पशुपालकों की थी। इनकी मान्यता है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता समाप्त हुई, उनके नगर ध्वस्त हो गई किंतु उनकी सभ्यता चलती रही व संभव है कि आर्य उनकी लिपि अपना ली, जिससे आगे ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति हुई। परंतु सिंधु लिपि से ब्राह्मी लिपि के उत्पत्ति का कोई पुरातात्विक प्रमाण नहीं है। इसलिए यह कहना असंभव है कि सिंधु घाटी लिपि से ब्राह्मी लिपि का विकास हुआ था या नहीं, और इस प्रकार हम उनके सिद्धांत को मानने के लिए युक्ति संगत नहीं है। एवं आर्य की जो लिपियाँ हैं उनमें वर्ग का अंतिम अक्षर नहीं है। यद्यपि ब्राह्मी में 'ङ' को छोड़ और सभी प्रकार के अक्षर पाये जाते हैं। यदि द्रविड़ से ब्राह्मी

का विकास हुआ होता तो इसके सबसे पुराने नमूने दक्षिण भारत से मिलते या विकास की कड़ी भी मिलती परंतु ऐसा नहीं है।

(b) आर्य उत्पत्ति सिद्धांत :— कुछ इतिहासकारों ऐसे हैं जो मानते हैं कि ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति स्वयं ब्रह्मा ने की। इनमें श्री कनिंघम, डोलेना व फुलाब का विचार है कि यह लिपि भारत में ही उत्पन्न हुई एवं इनके व्यवहार कर्ता आर्य ही थे। समाजशास्त्री डामीयटी मतव्य है। इनका कहना है कि वैदिक साहित्य में वर्णमाला का उल्लेख है। वैदिक मंत्रों, छंदों में भी अतः इनकी वर्णमाला अवश्य थी। परंतु तीसरी सदी ई० पू० के पहले के नमूने नहीं हैं क्योंकि वेदों को लोग लिखते नहीं थे बल्कि श्रुति परंपरा से याद रखते थे। विशेष बात यह है कि तीसरी सदी ई० पू० भी इस लिपि का व्यवहार धर्म प्रचार के लिए किया गया व इन अक्षरों को पत्थर पर खुदवाया गया। संभव है आर्य लोग वेदों को छोड़ अन्य ग्रंथों को लिखते होंगे जो नष्ट होने वाले पदार्थों पर लिखे गए थे। इसलिए ये मिलते नहीं हैं। इस लिपि का नाम ब्राह्मी इसलिए माना जाता है कि ब्रह्मा ने यह लिपि बनाई जो आर्यों के देवता व सृष्टि कर्ता माने जाते हैं।

(ii) विदेशी उत्पत्ति सिद्धांत :→ कुछ ऐसे विद्वान भी हैं जो यह मानते हैं कि ब्राह्मी लिपि न तो द्रविड़ से उत्पन्न हुई है न आर्यों द्वारा बल्कि भारतीयों ने इसे विदेशियों से ग्रहण किया। इसके संबंध में दो सिद्धांत मान्य हैं।

(a) सेमेटिक उत्पत्ति सिद्धांत
(b) ग्रीक उत्पत्ति सिद्धांत :—

(a) सेमेटिक उत्पत्ति सिद्धांत :— ब्राह्मी लिपि के उद्भव के संबंध में सेमेटिक सिद्धांत को मानने वालों में बेबर मुख्य हैं। इनका कहना है कि पश्चिम एशिया में सुमेरिया, बेबीलोन, फीनिशिया आदि में पुरानी सभ्यता विकसित थी। अरब व फीनिशिया में सिंधु-घाटी सभ्यता के समान ही विकसित सभ्यता थी। इनकी मान्यता है कि वहाँ लिपि भी प्रचलित था। मिट्टी की पकी ईंटों पर लोग लिखते व मंदिरों पर लिखा जाता था। कई ग्रंथ भी लिखे जाते थे व राजमहलों में पुस्तकालय होते थे। वहाँ की प्राचीन लिपि भी पढ़ी जा चुकी है। सिन्धु-घाटी के लोग इन सभ्यताओं के सम्पर्क में थे। व्यापारिक व सांस्कृतिक संबंधों

की परम्परा छठी सदी ई० पू० तक देखते हैं। बाबेल व सुरपारक जातियों में पश्चिम एशिया के साथ व्यापार दिखाया गया है। व्यापार में लिपि का विकास सेमेटिक होना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। संभवतः भारतीय ब्राह्मी लिपि का विकास सेमेटिक क्षेत्र में किया गया हो, परंतु इन विद्वानों का सिद्धांत तर्क संगत नहीं है। क्योंकि उनमें व ब्राह्मी लिपि में कोई समानता नहीं है। ब्राह्मी लिपि यदि सेमेटिक लिपि से विकसित हुई होती तो उसका प्रभाव अवश्य पड़ता। इसलिए सेमेटिक उत्पत्ति सिद्धांत को मानना युक्ति संगत नहीं है।

(b) ग्रीक उत्पत्ति सिद्धांत :— अंग्रेजों ने जब भारतवर्ष पर अधिकार कर लिया तब यहाँ की प्रत्येक वस्तु जो अच्छी थी, उसमें उन्हें यूनानी प्रभाव दिखाई पड़ने लगता था व मानते थे कि सिकंदर के आक्रमण के पूर्व भारतीयों की कोई सभ्यता नहीं थी। विशेषकर संस्कृति एवं कला के क्षेत्र में भारतीयों ने यूनानियों से ग्रहण किया। मैक्समूलर और सेनार्ट की मान्यता है कि भारतीयों ने अपनी लिपि का विकास भी ग्रीक लिपि के आधार पर किया है। कुछ लोग मानते हैं कि जब ~~कोई लिपि नहीं~~ अशोक को धर्म-प्रचार की आवश्यकता हुई तब कोई लिपि नहीं थी। तब ग्रीक के आधार पर ब्राह्मी लिपि बनवाई गई। इस तर्क के कुछ आधार भी हैं, क्योंकि अशोक के ब्राह्मी लिपि के कई अक्षर ग्रीक लिपि से मिलते हैं, परंतु अन्य कुछ इतिहासकार मानते हैं कि ऐसी बात नहीं थी। सिकंदर के पहले भी यहाँ के लोग लिपि से परिचित थे। और यदि ग्रीक लिपि व ब्राह्मी लिपि में कुछ सामान्य अक्षर हैं तो यह भी संभव है कि इन दोनों का विकास किसी एक सामान्य लिपि से हुआ है।

साहित्य में उल्लेखित लिपियों की सूची में ब्राह्मी लिपि को पहला स्थान दिया गया है और पश्चिमोत्तर क्षेत्र को छोड़कर सर्वत्र व्यवहार होती थी। मौर्य सम्राट अशोक के लेखों में ब्राह्मी लिपि का प्रयोग मिलता है। जैसा नाम से पता चलता है कि प्राचीन काल में ब्राह्मणों ने वेदों के रक्षार्थ इस लिपि का आविर्भाव भारत में हुआ और ब्राह्मणों द्वारा ग्रंथों में इसका प्रयोग हुआ। इसमें कठिनाई यह है कि ई० पू० चौथी सदी से पहले का कोई लेख ब्राह्मी में नहीं मिला है। अतएव पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि

व्यापारियों ने पश्चिम एशिया से ब्राह्मी लिपि का अनुकरण किया जो भारत की राष्ट्रीय लिपि नहीं मानी जा सकती है।

संसार की प्रायः सभी लिपियाँ प्रारम्भ में चित्र-लिपि थी। उससे ही कालांतर में लोगों ने अक्षरों को लिखना शुरू किया। प्रागैतिहासिक युग के मुहरों के लेख चित्र-लिपि में नहीं हैं। अतएव संभव है कि हड़प्पा सभ्यता की लिपि से ब्राह्मी लिपि क्रमशः विकसित हुई हो। साहित्यिक आधार पर बुद्ध से पूर्व ब्राह्मी लिपि का प्रचलन प्रकट होता है।

संक्षेप में यह व्यक्त करना आवश्यक है कि वैज्ञानिक रूप में ब्राह्मी लिपि के प्रत्येक अक्षर ध्वन्यात्मक चिन्ह हैं। लिखने तथा बोलने में समता है। इसमें 64 स्वर व व्यंजन के चिन्ह हैं। ह्रस्व तथा दीर्घ के पृथक चिन्ह वर्तमान हैं। मध्य में स्थित चिह्न से स्वर-व्यंजन का मेल होता है। इस प्रकार ब्राह्मी लिपि वैज्ञानिक लिपि है जिसमें एक क्रम है।

बौद्ध ग्रंथों में जितनी लिपियों के नाम आते हैं, उनमें ब्राह्मी लिपि को सर्वप्रथम स्थान दिया गया है। ई० पू० 500 वर्षों से ब्राह्मी लिपि का प्रयोग भारत में निरंतर होता रहा है। अशोक के समय तो सारे भारत में इसी लिपि में लेख अंकित किए गए।